कृपा की ना होती जो

कृपा की न होती जो आदत तुम्हारी,
तो सूनी ही रहती अदालत तुम्हारी,

ओ दोनों के दिल में जगह तुम न पाते
तो किस दिल में होती हिफाजत तुम्हारी,
कृपा की ना होती.……..

ग़रीबों की दुनिया है आबाद तुमसे,
ग़रीबों से है बादशाहत तुम्हारी
कृपा की ना होती.....,

न मुल्जिम ही होते न तुम होते हाकिम,
न घर-घर में होती इबादत तुम्हारी,
कृपा की ना होती.....

तुम्हारी उल्फ़त के दृग 'बिन्दु' हैं वे,
तुम्हें सौंपते है अमानत तुम्हारी,
कृपा की ना होती.....

सिंगर - भरत कुमार दबथरा

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/18518/title/kirpa-ki-na-hoti-jo-aadat-tumhari

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |